

121

23

आथ रघुवंशस्य अष्टमः सर्गः

Raghuvanshaya Ashtam Sarg

४८ तं १५४४ १५४४ १५४४ १५४४

X

121
23

121
23

१०. बु.
१

श्रीगणेशायनमः॥ अथ लस्य विवाह कौतुकं लक्षितं विष्णु त एव पार्ष्णि वः॥ वसुधा मपि हस्तगामिनी मक को दिंडु मती मिवा पंचा
॥ इति त्रै नपि कर्तु मात्म सा सुयतं ते नृप स न वीरिय त त उपगी कृत मगु सी द जः पितु ना ज्ञेति न भोग त क्त्वा या ॥ २ ॥ अनुभय वसि
ष्ट सै भ त्रैः॥ सलिले स्ते न स हा भि वे च नै॥ विशा कू सि त्रे न मे दि नी क य या मा स कृ ता र्थ ता मि व ॥ ३ ॥ सव भ व ड रा स दः प चै गु र ण
प र्व वि द कृ त क्रियः॥ प व ना गि स मा ग मो स्य वं स हि त्रे वु स प द सु ते ज सा ॥ ४ ॥ न भु मे व नि ह न्न यो व नं त म म म ल प जे श व नं ज नाः॥ स हि त स्य
न के व कं श्रि यं पु त्रि पें दे स कृ षा नु गु णा न पि ॥ ५ ॥ अ धि कं सु सु भे सु भा पु का हि त ये न व य मे व सं ग तं॥ प द म ह म जे न ये त कं वि न ये ना स्य न वं
च यो व नं ॥ ६ ॥ स द यं वु ध जे म स भु जः स ह सो के ग मि यं वु जे दि ति॥ अ चि ने प न ता स मे दि नी न व पा णि गु ह णं व धू मि व ॥ ७ ॥ अ ह मे व म नो
म ही प ते नि ति स र्व पु कृ ती षा चिं त य नू॥ उ द धे नि व नि म्ना गा श ने ष भ व न्ना स्य दि मा न ना के चि त् ॥ ८ ॥ न र व नो न च भ य सा म डः प व मा न
--- मि व ॥ स प न स्तु त म थ्य म क मो न म पा मा स नृ पा न नं त ना नू ॥ ९ ॥ अ थ वी स्य र धुः पु त्रि छि त्रे पु कृ ती षा त्म ज मा त्म व त्त य ॥ वि ष यं वु
वि ना त्रा ध र्मि सु त्रि दि व स्ते ष्वा पि नि स्य हो म व त् ॥ १० ॥ गु ण व स त् को पि त श्रि यः प रि णा मे व दि ता प वं श जाः॥ प द वी त र व स्त वा स सां पु
य ताः सं य मि नं पु ये दि ने ॥ ११ ॥ त म न ए प स मा ष्यो नु वं श न सा वे ष न शो सि ना सु तः॥ पि त्र नं पु त्रि प स पा द यो न प नि स ग म या च ता म नः ॥ १२ ॥

रामः
१

र. बु.
२

यतिभिः सार्धमनमिषमिजित् ॥ २४ ॥ अकनो सुतदृष्टं देहिकं पितृभ्यापितृकार्यकल्पवित् ॥ नहि ते नपथा तनुसज्जनयावर्जितपिंडकोसिणः ॥
सपनाधंगनेन शोभतोपितुहिन यसदर्थवेदिभिः ॥ शमितोपि न धिक्कार्यकः कृतवानपुत्रिणा सने जगत ॥ २५ ॥ सिति विंदुमती च
भामिनी पतिमासा घतमप्यौरुषं ॥ प्रथमा वरु नत्त स न भदपचावी नमजी जनसत् ॥ २६ ॥ दशान विमशतोपमधर्तियशासादि ॥ २७ ॥
दशसपिष्कृतं ॥ दशप्रवृत्तं समाल्याया दशकं दानि गुहं विदुर्बुधाः ॥ २८ ॥ साविदेवगणा सधाभुजां कृतयोगप्रसवेः सपार्थिवः अनुरा
तमुपेयिवानवभोपनिधेर्बुद्धौ सदीधितिः ॥ २९ ॥ बहुमात्रं प्रयोपशान्ते विदुषां संगतयेव दुःकृतं ॥ चसुतस्य न केव क्वं विभोर्गुणावज्ञापि
पनप्रयोजना ॥ ३० ॥ सकदाचिदवेसितपुनः सरु देव्या विजहा न सुपुजा ॥ नगोपवने शची सखो महताव - यितेव नंदने ॥ ३१ ॥ अयको धसिद
सिणोदधेः कृतमो कर्णनिकेतमीश्वरं उपवीणयितु ययौ न वेरुदयात् त्रिपयेन ना नदः ॥ ३२ ॥ कुसुमैर्गुपितामपार्थिवैः सजमातो च
शाने निवेशितं ॥ अह नलि - तस्य देगवानधिवासपिययेवमाहृतः ॥ ३३ ॥ भुमनैः कुसुमात्तु सानिभिर्विनिकीर्णपनिवादिनीसुनेः ददशेपव
नावलेपजं सजती वाष्पमिवो जनाविहं ॥ ३४ ॥ अविभयविभ्रतिमा त्वीमधुगं याति शयेन वीरधां नृपते नमस्तगायसादयितो रक्तु नकोटि
पुस्ति ॥ ३५ ॥ एणमा ३ सखी सजातयो न नयोत्ता समवेत्यविकु - निमिमी न नो नमपि यारुतं चं डानमसेव कौमुदी ॥ ३६ ॥ वपुवाक नरो
सिनेन सानिपतंती पतिमप्यपातयत ननु तैलनिषेकविदुना सरुदीपार्चि रयेति मेदिनी ॥ ३७ ॥ उभयोरपि पार्श्ववर्तिनां नृपु - ना त्वेन वेणवे ज
ता विरगाः कम - क नम्रियाः समः ॥ ३८ ॥ इव त ३ उ कु सु ॥ ३९ ॥ नृपते यजनादिभिस्तमो नु नु देसानुतयेव संस्क्रिता ॥ प्रतिकान विधानमो ॥ ४० ॥ सति शो

रामः
२

रघुनम्र सुखस्य तस्य तत्कृत्मा भीषितमात्मजप्रियः ननु सर्प इव त्वंच पुनः प्रतिपेदेद्यपवर्जितां प्रियं ॥ १३ ॥ सकळा अममं समाप्ति तो निव
सन्नावस्येष्ट राहतिः समुपास्यत पुत्रभोग्यपास्तु वये वातिकुत्रे प्रियः प्रिया ॥ १४ ॥ प्रामस्ती तपर्वपार्थिवंकुवमत्कयत नृतनेश्वरं न
भसानिभतेदनातुको सुदिता केण समाकु नेरुनत् ॥ १५ ॥ यति पार्थिवलिंगधानि लोह हस्ते नहु नातौ जनेः अथ वृत्तिमहोदयार्थ
यो भुवमंशा विवधर्मयो र्मत्रौ ॥ १६ ॥ अधिनाधिगमाय मंत्रिभिर्गुपुजेनीति विशान देन जः अथ पायिपदोपलक्षये नहु रात्रैः समयापयो
किभिः ॥ १७ ॥ नृपतिः पृथिवीमवैसिं सवहासनमासनेषु वा पविचेतुमयां नुधानां कुमापतं प्रवया सुविष्टं ॥ १८ ॥ अथ यत्प्रभुशक्ति संपदा
वशमेको नृपती ननेतरान् ॥ अथः पुलाधावयोभ्यामरुतः पंचशरी न गोचरान् ॥ १९ ॥ नयचक्षरजोदिह सपाप रंध्रस्य ततानमंडने
हृदये समरोपय न मनः पचमं ज्योतिर्विदेस्मिं नहुः ॥ २० ॥ अकरोदचि नेश्वरः सिनौ दिवता नं भक्तानि भस्मसात् ॥ इत गोदहने स्वकर्म
णां सव तज्ञानमयेन वक्रिना ॥ २१ ॥ पणबंधमुत्तानगुणानजः षडुपायुक्त समीक्ष्य तत्कथं ॥ नहु नय्यजयहुण वयं पुकृति स्यं समलोककः
नः ॥ २२ ॥ ननवः पुसुनापहोदयास्ति न कर्म विचराम कर्मणः ननु योगविधेन चेतः स्ति नधी नात्मप नमात्मदर्शनात् ॥ २३ ॥ इति रात्रुषु च
डियेवुच प्रतिदिष्ट प्रमनेषु जाग्रौ ॥ पुतता बुदया पवर्गयो र्भयं सिद्धि नभावमापनुः ॥ २४ ॥ अथ कस्ति दजय पेक्षया गमयेत्ता समदर्शनः
सनाः ॥ नमसः पचमापदव्ययं उरुवं योगसमाधिना रहुः ॥ २५ ॥ अने देह विसर्जनं पितृस्ति नमः अस्ति विमु अनाघवः ॥ विदधे विधि मस्य नेष्टिकं

र. बु.
३

सप्तमिदं पंकजं विनतास्यीत न वद पदस्वने ॥ ५६ ॥ शशि नं पुन नेत्रि को मुदी दयिता वं वचनं पत्रिणां ॥ इति तौ विह नं त्र न स मौ कथ
म संत गता न मां दहे ॥ ५७ ॥ नवपत्नव संस्त ने पिते म उ हयेत य दंग म र्पितं ॥ तदिदं विव रिष्य ते कथं व दवा मो ह चिता धि नो हं ॥ ५८ ॥
इयम पुत्रि बो ध शा सि नी न स ना त्वां पु य मा न हः स त्वी ग त वि भु म सा दि नी न वा न सु शा ना ना म ते व लु स्य ते ॥ ५९ ॥ क व म म भ ता सु भा
षि तं क व हं सी पु ग तं म दा लु स ॥ य व ती षु वि लो व मी सि तं प व नो ह त ल ता सु वि भु माः ॥ ६० ॥ वि दि वो त्स क पा य वे स्य मां नि हि ता स त म मी
गु णा त्म या ॥ वि न हे त व मे ग रु व य रु द ये न त व लं वि नु ल माः ॥ ६१ ॥ मि थु नं प नि क स्मि तु त्वा स ह का नः प्र वि नी च न न्नि मी ॥ अ वि धा य
वि वा ह स क्रि या म न यो गं म्य त इ त स पु तं ॥ ६२ ॥ कु सु मं कृ त दौ र द स्त वा द शो को प मु दी न पि ष्य ति ॥ स्म र ते व स रा ष्ट्र नू प च च न णा नु ग ह
म म दु र्ल भं ॥ ६३ ॥ अ मु ना कु सु मा सु व र्णि णा त्व म शो के न सु गा वि शो च ते ॥ त व वि श्व सि ता नु वा दि भि र्बु क्खं न र्ध चि त्तो स मं म य ॥ ६४ ॥ अ
स द य नि ता स मे ख कां कि मि दं कि न्ने न कं ठि सु ण्य ते ॥ स म दुः ख सु खः स त्वी ज नः पु त्रि प तें ड नि भो य मा त्म जः ॥ ६५ ॥ स म मे क न स त्ता या पि
ते व व सा यः पु त्रि प त्रि नि यु नः ॥ धु ति न स्त मि ता न ति स्तु ता वि न तं गे य म दु त्त त्व वः ॥ ६६ ॥ ग त मा भ न ण पु यो ज नं प रि ह र मं श य नी य म घ मे
गृ हि णी स चि वः स त्वी मि थुः प्रि य शि ष्या ल वि त्रे क्रि या वि धौ ॥ ६७ ॥ क र णा वि भु खे न म स्त ना ह न ता सां व द किं न मे ह तं ॥ म द म सि प दा न ना
र्पि तं म धु पी ता न स व क्थ यं नु मे ॥ ६८ ॥ अ नु या स्य सि वा ष्या ह वि तं प न लो को प न तां ज वां ज विं वि भे वे पि स ति त्वा वि ना सु ख मे ता व द ज स्य ग
या ता ॥ ६९ ॥ अ ह त स्य वि लो ध नां त नै म म स र्व वि ष या त्त्व दा श्रे यः ॥ वि ल य न्नि ति को श व धि यः क र णा र्थ गु णि तं प्रि यो पु त्रि ॥ ७० ॥ शु क ना स्य वि वी ह ता

रामः
३

वेति प्रह्लादकल्पते ॥४॥ पुत्रियो जपित सवल्ली की समवस्तु मय सत्ववत्तवान् सनिनायनि तोत्रवत्तवः पत्रिगहो चित्तमं कर्मगता ॥४२॥ प
तिनं कनिष्ठस्य कन्याया पवित्रकर्णया ॥ समलक्षत विभुदा विष्टा मगलेखा मुवसी वचं समा ॥४३॥ विललाप सवाद्यग रुदं सहसा अ
पवधा यधी नता ॥ अत्रितममयोपि मादं वंभजले केव कथा शरीरि ॥४४॥ कुसुमा मयि गत्र संगमा सुभवे सा पुरो हितु यदि ॥ नभ विष्पति
हंत साधने किमिवा मसु हनिष्यते विधेः ॥४५॥ अथ वाम दुवस्त दं शिनुं म दुना वा न सते पुजांतकः हिमसेक विपत्ति न त्रमे न छि नी पर्व
निदर्शने गता ॥४६॥ समिधं यदि जीविता परा हृदये किं निहितान हंति मां विषमथ मते कंचिद वेद मते वा विषमी श्वने कृया ॥४७॥
अथ वाम मभाग्य विष्णु वा दशनिः कल्पित एव वेधसा यद नेन न पात्रितस्तमः सिपता तद्विष्टा अयनना ॥४८॥ कृतव ससिना वधी नरा म
पना धोपि दाचि नं मयि ॥ सिपता तद्विष्टा अयनना कथमेक पदे निराग संजन मा भाष्यमिमं न मम से ॥४९॥ ध्रुव मस्मि शः सुविस्मि
ते विदितः केन ववत्स वस्तव ॥ पत्र लोक मसन्नि वृत्तये यदना भाष्यगता सिमामितः ॥५०॥ दपितां यदि तावद त्वगादि निवृत्ते किमिदं त्व
पाविना ॥ सह तो हत जीवितं मम पुवना मात्म कृतां सुवेदनां ॥५१॥ सत त म्भुम संभु मो मुखे धिय ते स्ते दल वो रु मो मुखे ॥ अथ वा प्रतिमा त्वमा
त्मना धिगीमां देह मसा नतां खलु ॥५२॥ मनसा धिन विप्रियं मया कृत पर्वत व किं जहा सिमां ॥ निशिसु प्रमि वैक पंक जं त्वयि मे वा वनि वं धना नतिः ॥५३॥
कुसुमोत्कृति तं वक्ष्यामि तस्वयं गृह च त्ववा वृकान् ॥ कत्र सो रुक ने त्रिमा ह तस्त ह पाव त्वे न शं कि मे मन ॥५४॥ तदु पो हितु न हं सिप्रिये पुति
वोधे न विवा द मा सु मे ॥ अवि ते न मु हा ग ते त मस्तु हि ना डे निवन त्ते मो वधि ॥५५॥ इद मु क्क सि ता व कं मुखं त व वि आ तिक थं ड नो ति मां ॥ निशि

र. बु.
४

महिषी चिरापसा ॥ उपलब्धं वतीति वक्ष्यते दिवशाशापनिवृत्तिका नाना ॥ ८२ ॥ लक्ष्मं तदपायचिंतयाति पदुत्पत्तिमतायवस्तिता
 वसुधेयमवेक्षता त्वया वसुमसा हि नृपाः कवचिणः ॥ ८३ ॥ नुदयेयदवाचमुष्मता कृतमाविकृतमात्मनस्तथा मनसस्तदुपस्थिते
 ज्वनं पुनन क्रीवतया प्रकाशयता ॥ ८४ ॥ हृदता कुत एव सा पुनसवतानानुमता पिलस्यते ॥ पनलोकजयोस्तकर्मभिर्मतयेभिन्नपयाहि
 देहिता ॥ ८५ ॥ उपशोकमनाः कुहं विनीमनुगृहीतानिवापदक्षिभिः ॥ स्वजनाश्च किकृतासंततं दहति प्रेतमिति पुवसते ॥ ८६ ॥
 मनसं प्रकृतिः त्रा नीरिणो विकृतिजरे वितमुच्यते बुधैः ॥ क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसनं यदि जंतुर्न लुना भवानसौ ॥ ८७ ॥ अथ गच्छति
 मूढचेतनः प्रियनाशं हृदि त्रा ल्यमर्थितं ॥ स्फु नधीस्तत एव मन्यते कुशाग्रो हारनया समाहृतं ॥ ८८ ॥ स्वशरीरं न शरीरिणा मयि स्म
 तसंयोगविपर्ययो र्धद ॥ विनहः किमिवानुतापयेद्दवाह्यैर्विषयैर्विपश्चितं ॥ ८९ ॥ नप्यप्यज्ञ न वहु चोवशं वशिना मुक्तमगं नुमर्ह
 सि ॥ पुमसा नुमतो किमंत नं घदिवा यो हितयेपिते च वा ॥ ९० ॥ सतरोति विनेतु वा द न मे पुति गृह्यव चो विससजं मुनिं ॥ तद
 लस्य पदं हृदि प्रो कथने पुति यात मिवांति कमस्य गुरो ॥ ९१ ॥ तेनाख्योपनिगमिताः समाः कथंचि दावत्वा दवित य स नृजे न स नो
 साहस्य पुति कृतिदर्शनैः प्रियायाः त्वमेव सुखेण क समागमो स वै स्व ॥ ९२ ॥ तस्य प्रविश्य हृदयं किं करो कशंकुर्लक्ष्य परो ह इव

रामः
४

मपि कृतसारां न सदा व्यदुर्दिनां ॥ अथ तस्य कथंचिदंतकः स्वजनास्तामुपनीतुं दधी ॥ १ ॥ विससर्ज तदंतं त्र्यं ड नाम मग पांगर चंदने से
प्रमदामनु संस्मृतः सुचानपतिः सति निवाच दर्शनात् ॥ २ ॥ न च का न श नीर मग्नि सा स ह देव्या ननु जीविता शया ॥ अथ ते न दशा हतः
पने गुण शेषा मपदि श्य भामि नी ॥ ३ ॥ विदुषा विधिपः समापिता पुन नेवो पव नेम हर्थ य ॥ स विवेका पुने त वा य श शं क दर्शनः
पनिवाह मिवावा लोक नू स्वसुचः पो न वधू मुरवा म्मु ॥ ४ ॥ अथ ते स व नाय दीक्षितः पुणि धा ना मु रु मा म्मा प्पित ॥ अभिषे ग
जडं विजिवा नि ति शि श्येण कि या च बो धये त ॥ ५ ॥ अ समा प्र वि धियं तो मु नि स व वि दान पि ता प का न ए ॥ न भ वं त मु प स्मृ तः
स्वयं प्रकृतौ स्थापयितुं क त स्मृ तिः ॥ ६ ॥ मपि तस्य सु व त्त व त्त त ल पु सं दे श प दा स न स्तु ती श्वा उ विष्णु त स त्व सा न तं ह दि चे
ना मु प धा नु म हं ति ॥ ७ ॥ पुरुष स्य त या य ज न्म नः स म नी तं वे भ व स्वे भा वि च ॥ स हि निः पु ति ये न च स्तु वा वि न य ज्ञा न म ये न प श्य ति
८ ॥ च न तः कि द उ स्त नं त प स्त ए वि दोः प नि शो कि तः पु न ॥ पु जि पा य स मा धि मे दि नी ह नि न स्मै ह वि णी सु गं ग नां ॥ ९ ॥ स त पः
पु ति वे ध म म्म ना वि मु खा विष्णु त चा रु वि भू मां ॥ अ श प ड् व मा नु सी ति तां श म वे द्या व द यो र्मि ल मु निः ॥ १० ॥ भ ग व म न वा न यं
ज वः पु ति कू ला च नि तं स म त्व मे इ ति चो प न तां सि ति स्य शं क त वा ना सु उ व्य दर्श नात् ॥ ११ ॥ क थं कै शि क वं श सं भ वा त व भ त्स

र. बु.
५

लोधतवविभेद॥ प्राणोत्तहेतुमपितंभिषजामसाध्यं पाप्मं पिपासुगमनत्वनयानुमेने॥ ८३॥ सम्यग्निव नीतमयवर्मधनं
कुमानेमादिष्परसाणविधौ विधिवत्तजाने॥ नो गोपसृष्टतनुयस्त्रिसतीमुमुक्षुः प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्वभव॥ ८४॥
तीर्थे तोययतिकरभवेज्जुकमाशानोयोदेहसागादसमनगणालेख्यमासाद्यसयः॥ पूर्वाकाराधिचतुनयासंगतः कोत
पासौ सीढागा नेष्टनमत्र पुनर्न दनास्यंतनेषु॥ ८५॥ इति श्री रघुवंशे महाकव्ये कलिदासकृतौ अजविलायो नमाष्टमः सर्गः ॥

राम.
५

१२/२३